प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/22

थेलेरियोसिस
एक धातक रक्त परजीवी जनित रोग

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

थेलेरियोसिस एक धातक रक्त परजीवी जनित रोग

- यह रोग हमारे देश में गाय–भैंस में मुख्यतः थेलेरिया एनूलाटा एवं भेड़–बकरी में थेलेरिया ओविस नामक रक्त प्रोटोजोआ के लाल रक्त कोशिकाओं में पाये जाने के कारण होता है, जिसका आकार मुख्यतः अँगूठी के आकार का होता है ।
- कम उम्र के बछड़ें इस रोग के प्रति अत्याधिक संवेदनल होते है ।
- इस रोग का प्रकोप वर्षा एवं ग्रीष्म ऋतुओं में अधिक होता है, क्योंकि इस मौसम में रोग संचरण करने वाली किलनियों (चमोकन) की संख्या में अत्याधिक वृद्धि हो जाती है । समय रहते इस रोग का समुचित उपचार न होने पर 90 प्रतिशत पशुओं की मृत्यु हो जाती है ।

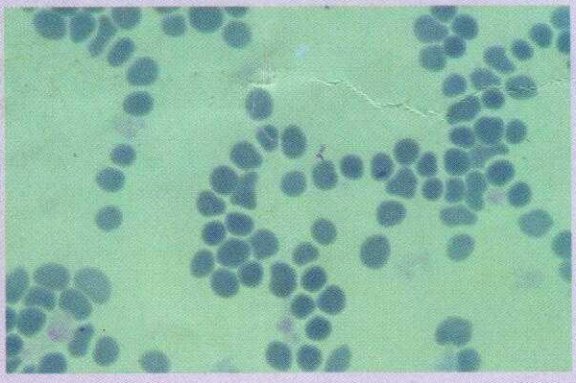

लाल रक्त कोशिकाओं मौजूद पाइरोप्लाज्म अवस्थाएं

रोग का प्रसार

इस रोग का फैलाव गाय–भैंस में खून चूसने वाले किलनी (चमोकन या अढैल) हाइलोमाएनालोटिकम द्वारा होता है।

रोग का लक्षण

- इस रोग से प्रभावित पशु में लगातार बहुत ज्यादा बुखार रहता है तथा स्केपुला के बगल वाले लिम्फ नोड (लसिका ग्रंथि) में सुजन हो जाना,

जो पशुओं के अगले एवं पिछले पैर के कुल्हों के आगे स्पष्ट बढ़े हुए आकार में नजर आते है ।

- इसके अलावे रोगग्रस्त पशु के शरीर में खून में कमी हो जाना, अत्याधिक कमजोर हो जाना, पशु द्वारा पूरी इच्छा के साथ आहार नही खाना, दुधारू पशु के दुध उत्पादन में बेहद कमी हो जाना, कभी–कभी संक्रमित पशु को खूनी दस्त होना इत्यादि थेलेरियोसिस रोग में लक्षण दिखाई पड़ता है ।

रोग का पहचान

- इस रोग का पहचान प्रमुख लक्षणों (स्केपुला के बगल वाले लिम्फ नोड में सुजन) क आधार पर किया जा सकता है । रोग–ग्रस्त पशु के रक्त एवं प्रभावित लिम्फ नोड का आलेप बनाकर

जिम्सा या लीशमैन से रंगकर सूक्ष्मदर्शी की सहायता से देखने पर क्रमशः लाल रक्त कोशिकाओं मे मुख्यतः अँगूठी के आकार की पाइरोप्लाज्म अवस्था तथा लिमफोसाइट में कोज्स ब्लू बॉडीज की उपस्थिति से रोग की पुष्टि की जाती है।

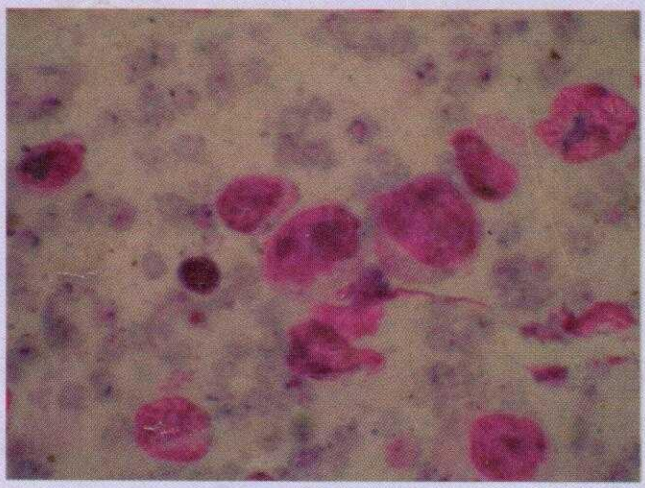

लिमफोसाइट में कोज्स ब्लू बॉडीज

रोग का उपचार

- थेलेरियोसिस रोग के इलाज हेतु बुपारवाकियोन (बुटालेक्स) औषधि प्रयोग पशुचिकित्सक की देख रेख में करना चाहिए ।

- कभी–कभी इस रोग से ग्रसित पशु के खून में हीमोग्लोबिन की मात्रा बहुत कम हो जाती है ऐसी परिस्थिती में मुख्य औषधि के साथ–साथ किसी स्वस्थ पशु का खून चढ़ाना, रोगग्रसित दुधारू पशु के लिए जीवन रक्षक का कार्य करता है ।

थलेरियोसिसरोग से बचावः–

- थलेरियोसिस रोग से बचाव हेतु **रक्षावैक–टी**टीका हमारे देश में उपलब्ध है । इस टीका का 3 एमएल 2 बर्ष के उपर के गाय एवं गाय के बछड़ों के गर्दन में त्वचा में टीका की सुई लगवानी चाहिए ।यह टीका ब्यानें वाली गायों को नही लगाते हैं । यह टीका तरल नाइट्रोजन में रखा जाता है ।

- इस रोग के प्रसार में किलनी (चमोकन) मदद करता है । अतः इस घातक एवं आर्थिक रूप से हानिकारक रक्त–परजीवी जनित रोग की रोकथाम, किलनी (चमोकन) की संख्या को कम करके भी किया जा सकता है ।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- अजीत कुमार एवं पंकज कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN